

जम्मू-कश्मीर में माता वैष्णो देवी मंदिर की यात्रा पर निकले श्रद्धालुओं के लिए हाल ही में आई भूस्खलन की घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया है। भारी बारिश से हुए इस हादसे में कई तीर्थयात्रियों की मौत हो गई और कई लोग घायल हुए, बचाव दल ने तुरंत मोर्चा संभाला, लेकिन प्रकृति के इस क्रोध ने एक बार फिर हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या हम हिमालयी क्षेत्रों में विकास और सुरक्षा के बीच संतुलन साध पा रहे हैं ?

दरअसल, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे पहाड़ी राज्य आज तीव्र विकास और बढ़ती आबादी का दबाव झेल रहे हैं। सड़क, सुरंग, होटल, हाइड्रो प्रोजेक्ट और धार्मिक पर्यटन की सुविधाओं ने पहाड़ों को लगातार खोखला किया है। परिणामस्वरूप जरा-सी बारिश या भूकंपीय हलचल बड़े हादसों का कारण बन जाती है। वैष्णो देवी के मार्ग पर हुआ भूस्खलन अपवाद नहीं, बल्कि उस संकट का हिस्सा है जो लंबे समय से

पहाड़ों की पुकार और हमारी जिम्मेदारी

वेतावनी देता आ रहा है। हिमालयी क्षेत्र भूगर्भीय दृष्टि से बहुत युवा और नाजुक माने जाते हैं। यहां पर प्राकृतिक संतुलन जरा-सा बिगड़ते ही आपदा का रूप ले लेता है। बारिश से पहाड़ों का कटाव बढ़ता है और अनियमित निर्माण कार्य इसे और भयावह बना देता है। वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी देते रहे हैं कि पर्वतीय इलाकों में निर्माण कार्य सीमित और संतुलित होना चाहिए, लेकिन दुर्भाग्यवश, विकास की अंधी दौड़ में हम इन चेतावनियों को नजर अंदाज कर रहे हैं। वैष्णो देवी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, अमरनाथ जैसे तीर्थस्थल हर साल लाखों लोगों को आकर्षित करते हैं। इतने बड़े पैमाने पर यात्रियों के आगमन के लिए बुनियादी ढांचे की जरूरत तो है, लेकिन यह आवश्यकता पहाड़ों की सहनशक्ति से अधिक नहीं होनी

चाहिए, अधिक सड़क चौड़ाकरण, होटल निर्माण और सीमेंट-कंक्रीट पर आधारित ढांचों से पहाड़ों की प्राकृतिक संरचना को नुकसान पहुंच रहा है।

अब समय आ गया है कि केंद्र और राज्य सरकारें मिलकर एक विशेषज्ञ समिति का गठन करें। यह समिति भूगर्भीयशास्त्रियों, पर्यावरणविदों, इंजीनियरों और आपदा प्रबंधन विशेषज्ञों से मिलकर बने। इसका मुख्य काम होगा, पर्वतीय इलाकों में चल रहे निर्माण कार्यों की निगरानी, तीर्थ और पर्यटन मार्गों के लिए वैज्ञानिक दृष्टि से सुरक्षित बुनियादी ढांचे का सुझाव देना, आपदा जोखिम मूल्यांकन और समय-समय पर सुरक्षा ऑडिट करना, स्थानीय समुदायों को आपदा प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना। दरअसल, हमारी नीतियों में यह

साफ होना चाहिए कि विकास का अर्थ केवल सड़कें, होटल और बिजलीघर खड़ा करना नहीं है। असली विकास वही है जो प्रकृति और समाज दोनों के अनुकूल हो। यदि हम पहाड़ों को असुरक्षित बना देंगे तो वहां का पर्यटन और धार्मिक आस्था दोनों ही खतरे में पड़ जाएंगे। कुल मिलाकर वैष्णो देवी हादसा केवल एक दुखद घटना नहीं, बल्कि एक संकेत चेतावनी है।

हमें यह समझना होगा कि पहाड़ों के विनाश की कीमत पर विकास नहीं हो सकता। यदि हम समय रहते नहीं चेते तो आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी। इसलिए अब जरूरी है कि हिमालयी राज्यों की सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। विशेषज्ञ समिति का गठन इस दिशा में पहला कदम हो सकता है। हमारे पहाड़ ईश्वरीय वरदान हैं, जाहिर है प्रकृति और श्रद्धा, दोनों का सम्मान करना ही हमारे लिए सच्चा धर्म और दायित्व है।

महाकौशल की डायरी

रडार पर रहेंगे ज्यादा विरोध वाले नवनियुक्त जिलाध्यक्ष ...?



अविनाश दीक्षित

संगठन को मजबूती देने के लिये 'संगठन' से काग्रेस में संगठन सृजन अभियान चलाया गया। महाकौशल के साथ ही समूचे प्रदेश के अनेक जिलों में नए जिलाध्यक्ष बनाए गए और कुछ जिलों में पुराने जिला काग्रेस अध्यक्षों को बरकरार रखा गया। इरादा तो काग्रेस संगठन के शक्तिकरण का रहा किंतु जैसे ही नवनियुक्त जिलाध्यक्षों की सूची सार्वजनिक हुई वैसे ही अनेक जिलों में विरोध के स्वर उठना शुरू हो गए जो अभी भी जारी हैं। महाकौशल के जबलपुर, बालाघाट, सिवनी, डिंडोरी सहित विन्ध्य के शहडोल, अनुपपुर जिलों में नए जिलाध्यक्षों के खिलाफ विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में कटाक्ष और आरोपों के ऐसे तीर चले कि पार्टी के शीर्ष नेताओं को बयान जारी करना पड़ गया कि विरोध जता रहे काग्रेसजन पार्टी फोरम में अपनी बात रखें, सोशल मीडिया का सहारा ना लें। इसके बाद सोशल मीडिया में विरोध का हो-हल्ला कुछ कम नजर आया, मगर विरोध स्वरूप कम कराने, प्रदर्शन किए जाने से यह बात तो जाहिर हो ही गई कि जिस तथाकथित रायशुमारी का चोला पहनकर पार्टी नेताओं ने निर्णय लिए उसमें विश्वसनीयता, सर्वस्वीकार्यता की जगह मनमानी ज्यादा नजर आई।

फिलहाल काग्रेस के गलियारों में चर्चा है कि मप्र में नियुक्त जिलाध्यक्षों को लेकर सबसे

ज्यादा शिकायतें राहुल गांधी तक पहुंची हैं, जिन्होंने नाराजगी जाहिर करते हुए नियुक्तियों के लिए जिम्मेदार संगठन के नेताओं को निर्देश दिए हैं कि मध्यप्रदेश में जो गलती हो गई है वैसे गलती अन्य राज्यों में न हो और ना ही उनके पास कोई शिकायत पहुंचे। राहुल के इस रुख के बाद कयास लगाए जा रहे हैं कि नवनियुक्त जिलाध्यक्षों में से कई को हटाया जा सकता है। ऐसे में उन जिलाध्यक्षों की नौद उड़ गई है जिनका ज्यादा विरोध हो रहा है। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि काग्रेस का संगठन पहले से ही कमजोर रहा है और यदि नियुक्ति के बाद नवनियुक्त जिलाध्यक्ष को हटाया जाता है तो दूसरे अन्य नेता क्या विरोध नहीं जताएंगे और फिर इनको किस तरह संतुष्ट किया जाएगा।

एफआईआर तक पहुंचने लगी बात ...

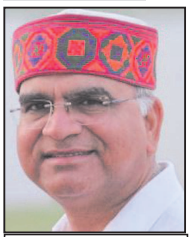
हर तालिका तीज के दिन काग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के महिलाओं को लेकर दिए गए बयान का अनुरण कर जबलपुर में सोशल मीडिया पर टिप्पणी करने का पहला मामला सामने आ गया है। जब काग्रेस के पूर्व अध्यक्ष लखन मंगेशकर ने बयान पर सहमति जताकर टिप्पणी की तो भाजपाईयों ने उनके खिलाफ घमापुर पुलिस थाना में एफआईआर दर्ज करा दी। सर्वविदित है कि 50 प्रतिशत आबादी महिलाओं की है। ऐसे में विन्ध्य में काग्रेस के लिए प्रदेश अध्यक्ष का ऐसा बयान महिलाओं पर क्या असर डालेगा, इस पर तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं लेकिन इसका परिणाम क्या होगा ये तो आने वाला समय ही बताएगा।

काग्रेस के प्रदर्शन ने भाजपाईयों को चौंकाया

जबलपुर में वीरगंगा रानी दुर्गावती पलाई ओवर ब्रिज का कुछ माह पहले काग्रेस ने जब सांकेतिक रूप से लोकार्पण किया था तो उस वक्त काग्रेस के प्रदर्शन में पूर्व विधायक संजय यादव, जिला अध्यक्ष सौरभ नाटी शर्मा के अलावा कोई स्थानीय बड़ा काग्रेस का चेहरा शामिल नहीं था। न तो इस दौरान पूर्व मंत्री लखन घनघोरिया, तरुण भनोत इस कार्यक्रम में शामिल हुए थे और न ही पूर्व विधायक विनय सबसेना... इसके बाद से जबलपुर में यह चर्चा होने लगी थी कि काग्रेस नेताओं में एकजुटता के अभाव के साथ गुटबाजी हावी हो चुकी है। लेकिन हाल ही में वोट चोरी के खिलाफ काग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के शहर में कदम रखने के बाद काग्रेस ने जो एकजुटता के साथ शक्ति प्रदर्शन किया है उससे आमजनों के साथ ही भाजपाईय भी चौंके हो गए हैं। इस प्रदर्शन में पूर्व मंत्री, विधायक लखन घनघोरिया, पूर्व विधायक विनय सबसेना के साथ सभी काग्रेसियों की मौजूदगी रही। यहां तक तो बात टीक ही थी लेकिन राजनीतिक गलियारों में यह सवाल पूछा जा रहा है कि आखिर कुछ ही समय में काग्रेस के अंदर ऐसा क्या हो गया है जिससे गुटबाजी में उलझे जबलपुर के काग्रेसी नेता एकजुट हो गए? चर्चा है कि प्रदेश काग्रेस अध्यक्ष को राहुल गांधी के द्वारा स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि संगठन सृजन अभियान के तहत अब काग्रेस में एकजुटता चरम पर लाई जाए और कहीं से भी यह जाहिर न हो कि पार्टी में एकजुटता का अभाव है। दूसरी ओर यही चर्चा की जा रही है कि काग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के समक्ष स्थानीय काग्रेस नेताओं ने शक्ति प्रदर्शन इसलिए किया क्योंकि वे अपना रिपोर्ट कार्ड दुरुस्त करवा सकें और 2028 में होने वाले विधानसभा चुनाव में उन्हें या उनके समर्थकों को उपकृत कर सकें।



राष्ट्रीय खेल दिवस पर विशेष



निखिलेश माहेश्वरी

29 अगस्त 2025 को हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की 120वीं जयंती है। उनका नाम आते ही हॉकी के मैदान में गेंद और स्टिक का अद्भुत संगम, दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देने वाला खेल-कौशल, और खेल के प्रति उनका अतुलनीय समर्पण स्मरण हो आता है। उनके अमूल्य योगदान के सम्मान में देश प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाता है। एक ऐसा दिन, जब खेल केवल प्रतियोगिता का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रप्रेम, अनुशासन और उत्कृष्टता का प्रतीक बन जाता है। खेलों का जीवन में महत्व अनुराग पुरोहित की इन पंक्तियों से सहज समझा जा सकता है—

जीवन का हिस्सा बना खेल, जीवन में लाता है प्रकाश यह तनाव को करता दूर, रोगों का करता है नाश। इससे आती है तंदुरुस्ती, और होता है बुद्धि विकास; खेल खेलने से तन थकता, मन न थकता है बार-बार

भारत के इतिहास पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट होता है कि प्रत्येक महापुरुष के जीवन में किसी न किसी खेल का विशेष स्थान रहा है। श्रीकृष्ण की गेंद-खेल और कालिया नाग दमन की डंडा, भीम का गदा-युद्ध में अप्रतिम कौशल, अर्जुन का धनुष-बाण संचालन अथवा छत्रपति शिवाजी महाराज की

सीमोल्लंघन की वीरतापूर्ण खेल-कूद की गतिविधियाँ, ये सभी केवल मनोरंजन के साधन नहीं थे, बल्कि उनके व्यक्तित्व-निर्माण की सुदृढ़ आधारशिला थे। निरसंदेह, इस देश की पावन मिट्टी में खेल-खेल में ही भगवान और वीर जन्म लेते रहे हैं। स्वामी विवेकानंद ने भी जब एक दुर्बल युवक को गीता पढ़ने की इच्छा व्यक्त करते सुना, तो पहले उसे गीता पढ़ने के बजाय फुटबॉल खेलने की सलाह दी उनका संकेत स्पष्ट था, मजबूत शरीर और स्फूर्त मन ही ज्ञान को आत्मसात कर सकता है।

हमारे पारंपरिक भारतीय खेल केवल शारीरिक स्वास्थ्य का साधन नहीं, बल्कि वे मनुष्य के भीतर साहस, संगठन, धैर्य, बलिदान और जीवन-दर्शन जैसे गुणों का विकास करते हैं। उदाहरण के लिए, कबड्डी में आउट होकर फिर इन होना मानो मृत्यु के बाद नए जीवन का संदेश देता है। निरसंदेह, देशज खेलों में गूढ़ शिक्षा छिपी है, जो खेलते-खेलते सहज ही मन में उतर जाती है।

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर हमें अपने देश के पारंपरिक खेलों को स्मरण



करते हुए भावी पीढ़ी को उनसे परिचित कराना चाहिए, साथ ही उन्हें आधुनिक खेलों में भी दक्ष बनाना चाहिए, क्योंकि खेल केवल शारीरिक स्फूर्ति का साधन नहीं, बल्कि चरित्र और संस्कारों के संवाहक भी हैं। यह खेल दिवस महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के स्मरण का अवसर है, जिनके अद्वितीय खेल कौशल और योगदान के सम्मान में राष्ट्रीय खेल दिवस घोषित किया गया। उनकी जयंती पर विद्यार्थियों और खिलाड़ियों के बीच श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए हमें उनके जीवन और आदर्शों से प्रेरणा लेकर संकल्प करना चाहिए कि हम खेल जगत में न केवल उत्कृष्टता, बल्कि शुचिता और राष्ट्रभक्ति का भी परचम लहराएंगे।

मेजर ध्यानचंद का जन्म 29 अगस्त 1905 को प्रयागराज में हुआ। बचपन में उनमें खिलाड़ी जैसे कोई विशेष लक्षण नहीं थे, पर सतत साधना, अभ्यास, लगन और संकल्प से उन्होंने हॉकी में महारथ प्राप्त की, जो उन्हें विश्वविख्यात बना गई। छठी कक्षा तक पढ़ाई के पश्चात 1922 में वे मात्र 16 वर्ष की आयु में प्रथम ब्राह्मण रेजिमेंट, दिल्ली में सिपाही के

रूप में भर्ती हुए। उनका असली नाम ध्यान सिंह था, लेकिन चांदनी रात में अभ्यास करने की आदत के कारण साथी उन्हें चंद कहने लगे और यही आगे चलकर उनका उपनाम बन गया—ध्यानचंद।

1928, 1932 और 1936 के ओलंपिक में भारत को लगातार तीन स्वर्ण पदक दिलाने में उनका योगदान निर्णायक रहा। 1936 के बर्लिन ओलंपिक फाइनल में भारत ने जर्मनी को 8-1 से हराया, जिसमें ध्यानचंद ने तीन गोल किए। जर्मन तानाशाह हिटलर भी उनके खेल-कौशल से इतना प्रभावित हुए कि उन्हें अपनी सेना में उच्च पद का प्रस्ताव दिया, परंतु ध्यानचंद ने यह कहकर ठुकरा दिया—मैंने भारत का नमक खाया है, देश से गद्दारी नहीं करूंगा। अपने करियर में उन्होंने 1000 से अधिक गोल किए और 'हॉकी का जादूगर' तथा 'The Magician' के रूप में विश्वविख्यात हुए। 1956 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। 3 दिसंबर 1979 को वे इस दुनिया से सदा-आसदा विदा हो गए, लेकिन उनकी स्मृति आज भी भारतीयों के हृदय में जीवित है।

हार हूँ तो मत घबराना, विजय मिली तो मत झरनाना, वृति खिलाड़ी भूल न जाना, आज रुके तो कल बढ़ जाना, विजय-पराजय जो भी आएँ, निर्भय होकर खेल — खेल खिलाड़ी खेल, खेल खिलाड़ी खेल।

(लेखक विद्या भारती मध्य भारत प्रांत के प्रांत संगठन मंत्री हैं)

मेजर ध्यानचंद खेल भावना के प्रतीक

29 अगस्त 2025 को हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की 120वीं जयंती है। उनका नाम आते ही हॉकी के मैदान में गेंद और स्टिक का अद्भुत संगम, दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देने वाला खेल-कौशल, और खेल के प्रति उनका अतुलनीय समर्पण स्मरण हो आता है। उनके अमूल्य योगदान के सम्मान में देश प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाता है। एक ऐसा दिन, जब खेल केवल प्रतियोगिता का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रप्रेम, अनुशासन और उत्कृष्टता का प्रतीक बन जाता है। खेलों का जीवन में महत्व अनुराग पुरोहित की इन पंक्तियों से सहज समझा जा सकता है—

जीवन का हिस्सा बना खेल, जीवन में लाता है प्रकाश यह तनाव को करता दूर, रोगों का करता है नाश। इससे आती है तंदुरुस्ती, और होता है बुद्धि विकास; खेल खेलने से तन थकता, मन न थकता है बार-बार

भारत के इतिहास पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट होता है कि प्रत्येक महापुरुष के जीवन में किसी न किसी खेल का विशेष स्थान रहा है। श्रीकृष्ण की गेंद-खेल और कालिया नाग दमन की डंडा, भीम का गदा-युद्ध में अप्रतिम कौशल, अर्जुन का धनुष-बाण संचालन अथवा छत्रपति शिवाजी महाराज की

सीमोल्लंघन की वीरतापूर्ण खेल-कूद की गतिविधियाँ, ये सभी केवल मनोरंजन के साधन नहीं थे, बल्कि उनके व्यक्तित्व-निर्माण की सुदृढ़ आधारशिला थे। निरसंदेह, इस देश की पावन मिट्टी में खेल-खेल में ही भगवान और वीर जन्म लेते रहे हैं। स्वामी विवेकानंद ने भी जब एक दुर्बल युवक को गीता पढ़ने की इच्छा व्यक्त करते सुना, तो पहले उसे गीता पढ़ने के बजाय फुटबॉल खेलने की सलाह दी उनका संकेत स्पष्ट था, मजबूत शरीर और स्फूर्त मन ही ज्ञान को आत्मसात कर सकता है।

हमारे पारंपरिक भारतीय खेल केवल शारीरिक स्वास्थ्य का साधन नहीं, बल्कि वे मनुष्य के भीतर साहस, संगठन, धैर्य, बलिदान और जीवन-दर्शन जैसे गुणों का विकास करते हैं। उदाहरण के लिए, कबड्डी में आउट होकर फिर इन होना मानो मृत्यु के बाद नए जीवन का संदेश देता है। निरसंदेह, देशज खेलों में गूढ़ शिक्षा छिपी है, जो खेलते-खेलते सहज ही मन में उतर जाती है।

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर हमें अपने देश के पारंपरिक खेलों को स्मरण

करते हुए भावी पीढ़ी को उनसे परिचित कराना चाहिए, साथ ही उन्हें आधुनिक खेलों में भी दक्ष बनाना चाहिए, क्योंकि खेल केवल शारीरिक स्फूर्ति का साधन नहीं, बल्कि चरित्र और संस्कारों के संवाहक भी हैं। यह खेल दिवस महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के स्मरण का अवसर है, जिनके अद्वितीय खेल कौशल और योगदान के सम्मान में राष्ट्रीय खेल दिवस घोषित किया गया। उनकी जयंती पर विद्यार्थियों और खिलाड़ियों के बीच श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए हमें उनके जीवन और आदर्शों से प्रेरणा लेकर संकल्प करना चाहिए कि हम खेल जगत में न केवल उत्कृष्टता, बल्कि शुचिता और राष्ट्रभक्ति का भी परचम लहराएंगे।

मेजर ध्यानचंद का जन्म 29 अगस्त 1905 को प्रयागराज में हुआ। बचपन में उनमें खिलाड़ी जैसे कोई विशेष लक्षण नहीं थे, पर सतत साधना, अभ्यास, लगन और संकल्प से उन्होंने हॉकी में महारथ प्राप्त की, जो उन्हें विश्वविख्यात बना गई। छठी कक्षा तक पढ़ाई के पश्चात 1922 में वे मात्र 16 वर्ष की आयु में प्रथम ब्राह्मण रेजिमेंट, दिल्ली में सिपाही के

रूप में भर्ती हुए। उनका असली नाम ध्यान सिंह था, लेकिन चांदनी रात में अभ्यास करने की आदत के कारण साथी उन्हें चंद कहने लगे और यही आगे चलकर उनका उपनाम बन गया—ध्यानचंद।

1928, 1932 और 1936 के ओलंपिक में भारत को लगातार तीन स्वर्ण पदक दिलाने में उनका योगदान निर्णायक रहा। 1936 के बर्लिन ओलंपिक फाइनल में भारत ने जर्मनी को 8-1 से हराया, जिसमें ध्यानचंद ने तीन गोल किए। जर्मन तानाशाह हिटलर भी उनके खेल-कौशल से इतना प्रभावित हुए कि उन्हें अपनी सेना में उच्च पद का प्रस्ताव दिया, परंतु ध्यानचंद ने यह कहकर ठुकरा दिया—मैंने भारत का नमक खाया है, देश से गद्दारी नहीं करूंगा। अपने करियर में उन्होंने 1000 से अधिक गोल किए और 'हॉकी का जादूगर' तथा 'The Magician' के रूप में विश्वविख्यात हुए। 1956 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। 3 दिसंबर 1979 को वे इस दुनिया से सदा-आसदा विदा हो गए, लेकिन उनकी स्मृति आज भी भारतीयों के हृदय में जीवित है।

हार हूँ तो मत घबराना, विजय मिली तो मत झरनाना, वृति खिलाड़ी भूल न जाना, आज रुके तो कल बढ़ जाना, विजय-पराजय जो भी आएँ, निर्भय होकर खेल — खेल खिलाड़ी खेल, खेल खिलाड़ी खेल।

(लेखक विद्या भारती मध्य भारत प्रांत के प्रांत संगठन मंत्री हैं)

अंततः मिग-21 को अंतिम विदाई

पिछले 6 दशक से भी अधिक समय से भारतीय वायुसेना में उल्लेखनीय भूमिका निभाने वाले लड़ाकू विमान मिग-21 को अंतिम विदाई दे दी गई। 1964 में रूस निर्मित यह विमान भारतीय वायुसेना में शामिल किया गया। 1965 और 1971 के दोनों युद्धों में इस विमान ने अत्यंत उपयोगी भूमिका निभाई। बांग्लादेश युद्ध के समय इसी विमान से ढाका के गवर्नर की कोठी को निशाना बनाया गया था। इसके दूसरे दिन गवर्नर ने इस्तीफा दिया और पाकिस्तानी फौज ने आत्मसमर्पण किया था। 1999 के ऑपरेशन %सफेद सागर% में मिग-21 ने पाकिस्तान के मनसूरे विप्लव कर दिए थे। 2019 में भी अपने मिग-21 से अभिनंदन वर्धमान ने पाकिस्तान के एच-16 विमान का मुकाबला किया था। इसके बावजूद अब लड़ाकू विमानों का तंत्रज्ञान बदल चुका है इसलिए पुराने मिग-21 को हटाना आवश्यक हो गया। अगले महीने 26 सितंबर को औपचारिक रूप से इस विमान की आखिरी उड़ान होगी। दुनिया की कोई वायुसेना इतने पुराने विमान इस्तेमाल नहीं करती। मिग के बाद भारत ने रूस से सुखई विमान खरीदे। बाद में फ्रांस से राफेल विमान हासिल किए गए। मिग-21 की जगह लेने के लिए अब तेजस विमान विकसित किया जा रहा है। इसमें दो



दूसरी ओर यह भी जरूरी है कि भारतीय वायुसेना नए आधुनिक विमान खरीदकर अपनी स्टाइल बढ़ाए क्योंकि चीन और पाकिस्तान दोनों का खतरा मौजूद है। तेजस विमानों के निर्माण में भी तेजी लानी होगी।

राय नहीं कि मिग-21 आउटडेटेड और रिस्की विमान बन चुका था। पलाइव लेॉपेटेंट अभिजीत गांधिल की राजस्थान के सूरतगढ़ में मिग-21 विमान की दुर्घटना में 17 सितंबर 2021 को मृत्यु हुई थी। तब से 4 वर्षों में भारतीय वायुसेना के 340 विमान दुर्घटनाग्रस्त हो चुके हैं जिनमें 150 से अधिक होनहार युवा पायलटों ने जान गंवाई। पुराने विमानों को स्पेयर पार्ट लगाकर जैसे-तैसे उड़ाना खतरनाक है। ये आसमान में कब दगा दे जाएंगे, इसका भरोसा नहीं रहा इसलिए 60 वर्ष पुराने मिग-21 को सेवा से हटा देना ही उचित है।

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12006 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	5	6	
7				8		
			9	10		
11	12		13	14		
			15		16	17
18				19		
20			21			
			22		23	

कार्य, खैरात ऊपर से नीचे

- नया-नया आया हुआ (सं.)
- दुख, शोक, जाना 3. मंद-मंद शब्द होना (युंथरू आदि का)
- पवित्र, निष्कलंक (उर्दू)
- तबे या पीतल की बड़ी बटनीयें
- शरमाना
- स्वभाव, जीवन में किए जाने वाले काम या आचरण
- डगमगाना, झोंका खाकर नीचे आना
- आवाज देना, चिल्लाकर बुलाना
- पानी से धोना
- खाली
- वस्तु, शरीर आदि की वह गर्मी अथवा सर्दी की वह स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है
- गोंद

बाएं से दाएं

- वह जिसका काम सभी बाधाओं से नरार की रक्षा करना हो
- समय का वह विभाग जो 24 सेकंड के बराबर होता है
- बौना, छोटे कद का, हड़प्पना
- भाई का पुत्र
- किसी वस्तु को ले आना या सामने रखना
- ची या तेल में पकाना या बघराना
- जोपण होना
- शत्रु, बैदी
- पत्रकार को पेशा या व्यवसाय
- कस्तूरी आदि का बना एक सुगंधित द्रव्य जो मूच्छित व्यक्ति को होश में लाता है
- रक्त पीने वाला, राक्षस
- जो खराब या निम्नष्ट हो चुका हो
- कोई शब्द या बात बार-बार कहना
- कहकर मुकर जाना
- देने का

Solution 12005

नि	रा	भि	ष	ध	ऊ
ग	ल	न	अ	म	रू
रा	ट	क	ट	कौ	बि
नी	म	श	ल	खा	ला
	हा	नि	मा	न	व
अ	प्र	का	शि	त	दा
क	ल	ह	ग	जा	न
रा	य	भि	डा	ना	ट

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्रों से मतभेद होगा, यात्रा का योग है, व्यर्थ की चिन्ताओं से मन तनावग्रस्त रहेगा, सामाजिक विवाद से अत्याधिक क्रोध से हानि होगी, वर्ष के मध्य में पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, अधिकारियों के सहयोग से कार्य बनेगा, पूर्व निर्धारित कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का मित्रों से मतभेद रहेगा, यात्रा का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का अधिकारियों से मन मुटाव रह सकता है,

मेघ - मामूली बात को तुल देने से संबंध बिगड़ सकते हैं, व्यवसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी, मानसिक अशांति बनी रहेगी मिलेगी, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वृषभ-अटका धन मिलने की उम्मीद है, दाम्पत्य सुख मिलेगा, धार्मिक कार्य स्थल पर प्रतिष्ठा दिखाने का अवसर मिलेगा, नौकर संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी, वातावरण अनुकूल रहेगा, कर्क-मयूर व्यवहार से सबको अपना बना लेंगे, मित्रों का सहयोग मिलेगा, राजकीय कार्य की रूपरेखा पर विचार होगा, मन:स्थिति संतुलित रहेगी,

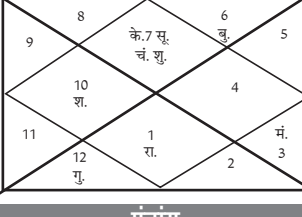
सिंह - कार्यस्थल पर व्यवस्था बनाने के लिये कठोर निर्णय लेने पड़ेंगे, आशा से अधिक खर्च होगा, मानसिक अशांति बनी रहेगी, दिनचर्या अनियमित रहेगी, कन्या - नौकरों में प्रतिष्ठा मिलने के आसार हैं, भूमि भवन वाहन खरीदने का मन बनेगा, कुछ जरूरी कामकाज होने से मन को खुशी होगी, तुला-अनुभवी लोगों के साथ काम में निष्ठा आयेगी, आर्थिक कार्यों में सतर्कता रखें, मित्रों का सहयोग बना रहेगा, पूज्य व्यक्ति की सेवा करना हितकर रहेगा, वृश्चिक-लेखन और कला से जुड़े लोगों को सम्मान मिलेगा, दिखाने के चकर में कर्ज का बोझ बढ़ सकता है, नौकरों एवं अधिनस्थ वर्ग सहयोग करेंगे,

आज जन्म शिशु का भविष्य

आज जन्म प्रति बालक की शिक्षा के लिये लगनशीलता रहेगी, स्वास्थ्य की दृष्टि से बालक के ग्रहयोग मददगार सिद्ध होंगे, मित्रों की संख्या अधिक रहेगी, खेलों के प्रति लगाव रहेगा, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा,

धनु- वाक चतुर्य से विगड़ी बात बना लेंगे, लापरवाही की तो अधिकारी नाराज हो सकते हैं, कोर्ट के कार्यों में सफलता के योग है, दिनचर्या नियमित रहेगी, मकर-अपनों से संबंध सुधारने की कोशिश सफल होगी, संतान सुख मिलेगा, सोचे वृत्त कार्यों में गति आयेगी, विवाहों को टालना हितकर रहेगा, कुम्भ-देवाय में समझौता करना पड़ सकता है, सुख सुविधा पर खर्च होगा, शुभ संदेश प्राप्त होगा, अतिथि आगमन की संभावना है, सुख सौभाग्य प्राप्त होगा, मीन-प्रायटी संबंधी विवादों का समाधान होगा, दिग्गम की बजाय दिल से काम लें, पारिवारिक जीवन सुखमय बना रहेगा, मांगलिक कार्य पूर्ण होने का योग है,

उदयकालीन ग्रह चाल



पंचांग

रा.मि. 07 संवत् 2082 भाद्रपद शुक्ल षष्ठी भृगुवासरं शाम 5/55, स्वाती नक्षत्रे दिन 10/50, ब्रह्म योगे दिन 2/31, तैलिल करणें सू.उ. 5/42 सू.अ. 6/18, चन्द्रचार तुला, पूर्व-श्री सूर्य षष्ठी व्रत, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल षष्ठी को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से गुड, खांड, रूई, कपास, सूत, खल, बिनौला, गेहूं, जौ, चना, जूट, पाट, बादामान में नरमी का रूख रहेगा, वायदा विचार आज पिछले दिन के भाव पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा, भाग्यांक 2589 है.

SUDOKU 7138

7	8		2	6	3	
			4			
1	3	5	8			
	2		1		7	8
6	7		9			